Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

पार्श्वनाथ जैन मंदिर: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

Ghanshyam lal dhaker

NET- History

सारांश

यह शोध-पत्र सिरोही जिले के प्रसिद्ध जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर की ऐतिहासिकता और धार्मिकता पर आधारित है, जिसमें मंदिर के ऐतिहासिक विकास, क्षेत्रीय परंपराओं और धार्मिक संस्कृति का गहराई से अध्ययन किया गया है। इस मंदिर का महत्व केवल एक पूजा स्थल के रूप में ही नहीं, बल्कि यह एक समृद्ध तीर्थ स्थल भी है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और बौद्धिक दृष्टिकोण से अनगिनत आयामों को समेटे हुए है।मंदिर का इतिहास अतीत से लेकर वर्तमान तक एक लम्बे समयकाल की यात्रा को दर्शाता है, जहाँ लोक संस्कृति और परंपराओं का संगम है। यह तीर्थ स्थल न केवल धार्मिक आस्थाओं का केंद्र है, बल्कि यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन का भी प्रमुख अंग बन चुका है।जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर में 108 पार्श्वनाथ प्रतिमाओं सहित अन्य मूर्तियों और अभिलेखों का संग्रह है, जो इसके ऐतिहासिक महत्व को उजागर करते हैं। इसके अतिरिक्त, मंदिर के विभिन्न भवनों, जीर्णोद्धार कार्यों, प्राण-प्रतिष्ठाओं और तीर्थ क्षेत्र के विस्तार का भी इस शोध में विशेष उल्लेख किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से इस मंदिर के वास्तु-संस्कृति और धार्मिक इतिहास का भी बारीकी से विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: पार्श्वनाथ, जीरावला, जैन, युगयुगीन, सिरोही, तीर्थ-मंदिर, ऐतिहासिकता, धार्मिक संस्कृति

भूमिका

सिरोही जिले की पहचान इसके भव्य जैन मंदिरों से है, जो न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यधिक प्रतिष्ठित हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश जैन मंदिर श्वेताम्बर मत से संबंधित हैं, और यहाँ जैन धर्म के तीर्थंकरों—आदिनाथ (ऋषभदेव) से लेकर महावीर स्वामी तक के मंदिर और तीर्थ स्थल स्थित हैं। इसके अलावा, अन्य धर्मों के मंदिरों के साथ-साथ जैन धर्म के अनगिनत मंदिर और जिनालय भी यहां पाए जाते हैं। इन मंदिरों की उपस्थिति के कारण ही सिरोही जिले को 'देवनगरी' कहा जाता है।

जैन धर्म के ये मंदिर अपनी प्राचीनता और ऐतिहासिकता के लिए प्रसिद्ध हैं, और इन्हें तीर्थ स्थल के रूप में सम्मानित किया जाता है। प्रत्येक जैन मंदिर में भगवान के मूलनायक की प्रमुख मूर्ति मुख्य वेदी पर विराजमान होती है, और वही मूर्ति उस मंदिर का केंद्र बिंदु होती है। सिरोही जिले के जैन मंदिरों की परंपरा में देलवाडा (आबू पर्वत), बामणवाड, जीरावला पार्श्वनाथ, मीरपुर, मुंगथला, नांदियां, पावापुरी, भैरू तारक आदि का विशेष स्थान है।

इतिहास के दृष्टिकोण से, भगवान महावीर स्वामी ने अपने जीवन के छद्म अवस्था में अर्बुदांचल, जीरावला, बामनवाड, भीनमाल और जाबालीपुर में यात्रा की थी, जिसे भीनमाल के अभिलेखों से प्रमाणित किया गया है। इसी तरह, मुंगथला के अभिलेखों से भी इसकी पुष्टि होती है। इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने विक्रम संवत की दूसरी शताब्दी के शिलालेखों के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि राजा सम्प्रति मौर्य से पूर्व भी इस क्षेत्र में जैन धर्म का प्रचार हुआ था। महाक्षत्रप रूद्रदामन के जुनागढ़ अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि मरू राज्य इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

8वीं शताब्दी में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित 'कुवलयमाला' में उल्लेख है कि हूण राजा मिहिरकुल और तोरमाण, जो जैन धर्म के उपासक थे, उनके शासन काल में इस भू-भाग में जैन धर्म की उन्नति हुई।

जीरावला पार्श्वनाथ मंदिर के बारे में एक प्रसिद्ध जनश्रुति है, जिसमें कहा गया है कि जैनाचार्य देवसूरीश्वर और कोडी ग्राम (भीनमाल के पास) के सेठ अमरसा ने स्वप्न में देखा था कि जीरावला पर्वत के पास एक गुफा में जमीन के नीचे पार्श्वनाथ की प्रतिमा छिपी हुई है। इस स्वप्न के आधार पर खोजबीन करने पर वहां पार्श्वनाथ की प्रतिमा मिली। पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे और उन्होंने जैन धर्म को सिद्धांतिक आधार प्रदान किया, तथा श्वेताम्बर मत में उनकी अत्यधिक मान्यता है।

चित्र सं. 1 : मूलनायक जीरावला पार्श्वनाथ की प्राचीन प्रतिमा

चित्र सं. 2 : मूलनायक जीरावला पार्श्वनाथ की प्रतिमा की आंगी

विधि-विधान

विक्रम संवत् 326 में सेठ अमरसा और जैनाचार्य देवसूरीश्वर के मार्गदर्शन में जीरावला पार्श्वनाथ मंदिर के निर्माण की शुरुआत हुई, और विक्रम संवत् 331 में मंदिर में पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस मंदिर को कई बार भव्य जीर्णोद्धार से गुजरना पड़ा, और प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी विभिन्न अवसरों पर की गई।विभिन्न कालों में जैन आचार्य और प्रतिष्ठित सेठों ने मंदिर के जीर्णोद्धार और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। विक्रम संवत् 663 में आचार्य मेरूसूरीश्वर के नेतृत्व में एक प्रमुख जीर्णोद्धार हुआ। इस दौरान गुप्तकाल के हूण नरेश तोरमाण के गुरु हरिगुप्त के शिष्य देवगुप्तसूरी ने मंदिर की यात्रा की, और शिवचन्द्रगणि ने अपने शिष्य यक्षदत्तगणि के साथ यहाँ कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया।आचार्य उद्योतनसूरी के विद्वान गुरु आचार्य हरिभद्रसूरी ने भी मंदिर की पुनः

प्रतिष्ठा करवाई। प्रतिहार राजा नागभट्ट ने जीरावला के पास नागाणी नामक स्थान पर नागजी का मंदिर बनवाया, जो आज भी टेकरी पर स्थित है और जीरावला के क्षेत्रपाल के रूप में पूजे जाते हैं।

विक्रम संवत् 1033 में जैनाचार्य सहजानंद और तेतली नगर के सेठ हरदास के नेतृत्व में मंदिर का दूसरा जीर्णोद्धार हुआ। मध्यकाल में, जब सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं ने जालोर पर आक्रमण किया, तो जीरावला मंदिर के पास स्थित वैष्णव धर्म का अम्बादेवी मंदिर नष्ट कर दिया गया था, और मंदिर की संपत्ति को लूट लिया गया। इसके बावजूद, जीरावला मंदिर को नष्ट नहीं किया जा सका, जैसा कि कान्हडदेव प्रबंध में भी उल्लेख है।

विक्रम संवत् 1191 में आचार्य अजितदेवसूरी और सेठ धांधल के समय मंदिर का तीसरा जीर्णोद्धार हुआ, और कुछ नए मंदिरों का निर्माण हुआ। हाल ही में, 2017 में मंदिर का पूर्ण जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ, जो मंदिर और तीर्थ स्थल की महिमा का एक जीवित उदाहरण है।

मंदिर के पीछे की टेकरी पर एक प्राचीन किले के अवशेष देखे जा सकते हैं, जो शायद मंदिर के प्राचीन परकोटे जैसा प्रतीत होता है। विक्रम संवत् 1851 के शिलालेख के अनुसार, इस मंदिर में मूल नायक के रूप में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित थी, लेकिन किसी कारणवश भगवान नेमिनाथ को मुख्य नायक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। इस घटना की पुष्टि किसी शिलालेख से नहीं होती है।पूर्व के प्राचीन मंदिर के बांयी ओर एक कोठरी में पार्श्वनाथ की दो मूर्तियां रखी गई हैं, जबकि दूसरी कोठरी में भगवान नेमिनाथ की मूर्ति है। मंदिर के मूल नायक का परिवर्तन संभवतः विभिन्न आक्रमणों से चमत्कारिक पार्श्वनाथ की मूर्ति को बचाने के उद्देश्य से किया गया होगा।

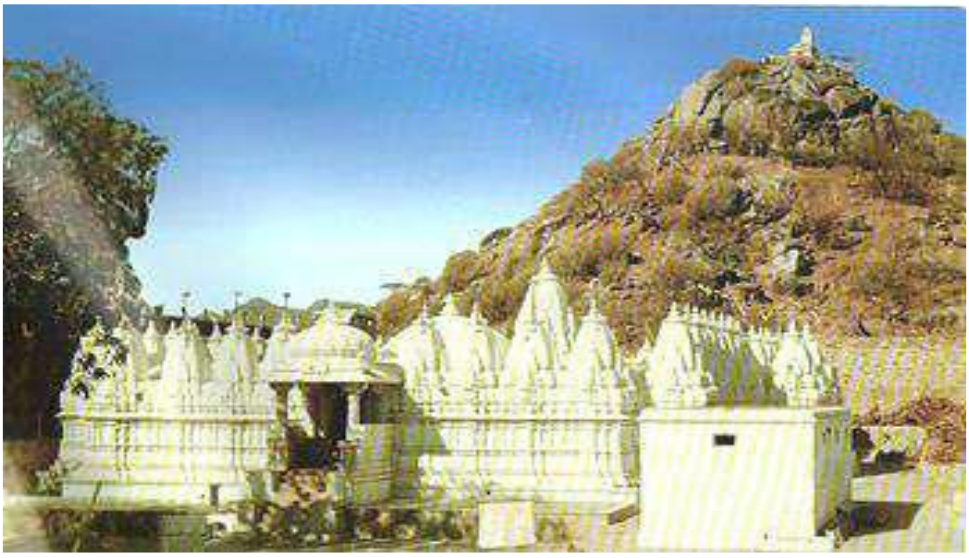

चित्र सं. 3 : जीरावला पार्श्वनाथ का प्राचीन मंदिर

मंदिर का नाम और महिमा

जैन शास्त्रों में जीरावला मंदिर और तीर्थ के कई नाम उल्लेखित हैं, जैसे: जीरापल्ली, जीरिकापल्ली, जीरावल्ली और जयराजपल्ली। प्रो. सोहनलाल पटनी ने अपने साक्ष्यों के आधार पर इस पर्वत का नाम जयराज बताया है, जिसकी तलहटी पर जीरावला मंदिर स्थित है। उन्होंने यह भी बताया कि जयराजपल्ली का अपभ्रंश रूप जीरावला नाम से आज प्रचलित है। इस मंदिर के प्रति श्रद्धा और आस्था का प्रतीक श्री जिनभद्रसूरी के शिष्य सिद्धान्तसूरी ने श्री जयराजसूरीश श्री पार्श्वनाथ स्तवन की रचना की है। इस मंदिर का पवित्र मंत्राक्षर ''ऊँ श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः'' है।

मंदिर की विशेषताएँ

जीरावला मंदिर 52 जिनालय श्रेणी का मंदिर है, जो अपनी भव्यता, वैभव और चमत्कारिक प्रभाव के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत को भी संजोए हुए है। इस मंदिर में 108 विभिन्न जैन देव प्रतिमाएँ हैं, जो विभिन्न कक्षों (देहरी) में रखी गई हैं। जीरावला पार्श्वनाथ का श्वेताम्बर जैन मत में अत्यधिक महत्व है और उन्हें एक चमत्कारी देवता के रूप में पूजा जाता है। कई जैन आचार्यों ने विभिन्न कालों में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में मंदिर के मुख्य नायक पार्श्वनाथ की महिमा का वर्णन किया है।

मंदिर जैन धर्म में तीर्थ की श्रेणी में आता है और श्वेताम्बर जैन धर्म की गुरु-शिष्य परंपरा में 84 गच्छों में से एक महत्वपूर्ण गच्छ 'जीरापल्लीगच्छ' के नाम से प्रसिद्ध है। जीरावला मंदिर के दर्शन मात्र से भक्तों के क्रोध का नाश होता है। श्रद्धालु भगवान पार्श्वनाथ को भक्तिभाव से जीरावला प्रभु या जीरावला दादा के रूप में पुकारते हैं।

स्थानीय आस्था और चमत्कार

इस मंदिर का महत्त्व केवल जैन समुदाय में ही नहीं, बल्कि अन्य स्थानीय लोगों के बीच भी गहरा है। जीरावला पर्वत पर जीरावल भैरू का वास होने के कारण इस तीर्थ स्थल की महिमा नाकोडा तीर्थ के समान मानी जाती है। मंदिर में प्रतिष्ठित देवी पद्मावती की बैठी और खड़ी मूर्तियाँ दोनों ही चमत्कारिक मानी जाती हैं, और भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

मुख्य गर्भगृह और प्रतिमा

मंदिर का मुख्य भाग गर्भगृह है, जहाँ पर भगवान जीरावला पार्श्वनाथ की अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थापित है। पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर सर्पफण (नाग के फन) की आकृति दिखाई देती है, और विशेष पर्वों पर इस प्रतिमा की सुंदर आंगी (श्रृंगार) की जाती है, जो भक्तों के मन को मोह लेती है।

इस प्रकार, जीरावला पार्श्वनाथ मंदिर केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यधिक सम्मानित है।

जीरावला मंदिर की देवकुलिकाओं की विशेषता

जीरावला मंदिर के गर्भगृह में देवी पद्मावती की खड़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित है, जो अपने चमत्कार के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा, मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर पार्श्वनाथ भगवान की मूर्तियाँ स्थापित हैं, और मुनिसुव्रत स्वामी की काले पत्थर से बनी मूर्ति भी यहाँ विराजमान है। मंदिर में कुल 39 देवकुलिकाएँ हैं, जिनमें विभिन्न जैन तीर्थंकरों और देवताओं की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं।

1. **प्रथम देवकुलिका** में दादा पार्श्वनाथ, पंचासरा पार्श्वनाथ और कल्याण पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित हैं।
2. **द्वितीय देवकुलिका** में अजिरापार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की प्रतिमाएँ हैं।
3. **तृतीय देवकुलिका** में माणिक्य पार्श्वनाथ, नवखण्डा पार्श्वनाथ और सूर्यमण्डल पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
4. **चतुर्थ देवकुलिका** में चिन्तामणी पार्श्वनाथ, वरकाणा पार्श्वनाथ और लोद्रवा पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ हैं।
5. **पञ्चम देवकुलिका** में जगवल्लभ पार्श्वनाथ, भाभा पार्श्वनाथ और मोरैया पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
6. **षष्ठम देवकुलिका** में फलोदी पार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं।
7. **सप्तम देवकुलिका** में करहेड़ा पार्श्वनाथ, नाकोडा पार्श्वनाथ और कापरडा पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
8. **अष्टम देवकुलिका** में मनमोहन पार्श्वनाथ, गोडी पार्श्वनाथ और पोसीना पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ हैं।

9. **नवम देवकुलिका** में नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और मल्लीनाथ की दो मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
10. **दशम देवकुलिका** में पार्श्वनाथ, कलिकुण्ड पार्श्वनाथ और कल्याण पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
11. **एकादश देवकुलिका** में शीतलनाथ पार्श्वनाथ, मुनिसुव्रत स्वामी और शान्तिनाथ की प्रतिमाएँ हैं।
12. **द्वादश देवकुलिका** में पद्मप्रभु, भीडभंजन पार्श्वनाथ और नेमिनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
13. **तृतीय एवं चतुर्थ देवकुलिका के बीच** में गोखले में मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा है।
14. **चतुर्थ देवकुलिका** में श्याम वर्ण में आदिश्वर पार्श्वनाथ और नाग रहित पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
15. **पञ्चम देवकुलिका** में अवन्ति पार्श्वनाथ, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ और पोसीना पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
16. **षष्ठम देवकुलिका** में श्याम वर्ण की दो और श्वेत वर्ण की एक पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
17. **सप्तम देवकुलिका** में नवलखा पार्श्वनाथ, मक्षी पार्श्वनाथ और नवपल्लवीया पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
18. **अष्टम देवकुलिका** में शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ और चन्द्रप्रभु की मूर्तियाँ हैं।
19. **नवम देवकुलिका** में यवलेश्वर पार्श्वनाथ, श्री वरेज पार्श्वनाथ और गागाणी पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
20. **दशम देवकुलिका** में सम्भवनाथ, पार्श्वनाथ और चन्द्रप्रभु की मूर्तियाँ हैं।
21. **एकादश देवकुलिका** में पार्श्वनाथ, सम्मेतशिखर पार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
22. **द्वादश देवकुलिका** में नगीना पार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ और शाचा पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
23. **तेरहवीं देवकुलिका** में दो पार्श्वनाथ और एक धर्मनाथ की मूर्ति प्रतिष्ठित है।
24. **चतुर्दश देवकुलिका** में भटेवा पार्श्वनाथ, सांवला पार्श्वनाथ और मनवांछत पूराण पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
25. **पंचदश देवकुलिका** में महावीर स्वामी, पार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की मूर्तियाँ हैं।
26. **षोडश देवकुलिका** में आदिश्वर, पार्श्वनाथ और धर्मनाथ की मूर्तियाँ हैं।
27. **सप्तदश देवकुलिका** में जेरींग पार्श्वनाथ, बलेचा पार्श्वनाथ और धींगडमल्ला पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
28. **अष्टदश देवकुलिका** में सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ और मुनिसुव्रत स्वामी की मूर्तियाँ हैं।
29. **नवदश देवकुलिका** में महावीर स्वामी, दुधिया पार्श्वनाथ और ककडेश्वर पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
30. **एकविंश देवकुलिका** में वासुपूज्य स्वामी, पार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की मूर्तियाँ हैं।
31. **द्वाविंश देवकुलिका** में रायण्या पार्श्वनाथ, दुःखभंजन पार्श्वनाथ और नाकला पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
32. **त्रैविंश देवकुलिका** में पार्श्वनाथ, गाडरिया पार्श्वनाथ और आदिश्वर की मूर्तियाँ हैं।
33. **चतुर्विंश देवकुलिका** में डोकरिया पार्श्वनाथ, गाडरिया पार्श्वनाथ और आदिश्वर की मूर्तियाँ हैं।
34. **पंचविंश देवकुलिका** में सुमतिनाथ, नाकोडा पार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं।
35. **षट्विंश देवकुलिका** में शान्तिनाथ और महावीर स्वामी की दो मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
36. **सप्तविंश देवकुलिका** में पार्श्वनाथ के दोनों ओर शान्तिनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
37. **अष्टविंश देवकुलिका** में सम्भवनाथ के दोनों ओर पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।
38. **नवविंश देवकुलिका** में बाहर गोखले में श्रेयांसनाथ की मूर्ति है।

इन सभी देवकुलिकाओं में जैन धर्म के विभिन्न तीर्थंकारों और देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो भक्तों के लिए श्रद्धा और भक्ति का बड़ा केंद्र हैं।

सारांश

जीरावल पार्श्वनाथ मंदिर जैन धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है, जो अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक महिमा के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर के बारे में विभिन्न जैन शास्त्रों में कई नामों का उल्लेख मिलता है, जैसे जीरापल्ली, जीरिकापल्ली, जीरावल्ली और जयराजपल्ली। प्रो. सोहनलाल पटनी के अनुसार, इस पर्वत का नाम जयराज है, और

जीरावला मंदिर इसके तलहटी में स्थित है। इस मंदिर में पार्श्वनाथ भगवान की प्रमुख प्रतिमा के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण जैन देवताओं की 108 मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। मंदिर की संरचना में विभिन्न देवकुलिकाओं में पार्श्वनाथ भगवान की कई विविध प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं, जो विभिन्न नामों और स्वरूपों में पाई जाती हैं। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में पद्मावती देवी की खड़ी प्रतिमा भी अत्यधिक चमत्कारिक मानी जाती है, साथ ही पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं भक्तों के लिए आस्था का केंद्र हैं। जीरावला पार्श्वनाथ मंदिर का दर्शन करने से भक्तों के क्रोध का नाश होने की मान्यता है, और यह मंदिर न केवल जैन समुदाय, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए भी धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है।

यह मंदिर श्वेताम्बर जैन समाज के अंतर्गत आता है और जीरापल्लीगच्छ का हिस्सा है, जो जैन धर्म की 84 गच्छों में एक प्रसिद्ध गच्छ है। मंदिर के विभिन्न पुराणों और शास्त्रों में पार्श्वनाथ की महिमा का वर्णन किया गया है, और यहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह तीर्थ स्थल चमत्कारी और पुण्यकारी माना जाता है। मंदिर की भव्यता, सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक महत्व के कारण यह जैन धर्म के अनुयायियों और श्रद्धालुओं के लिए एक अद्वितीय तीर्थ स्थल है।

संदर्भ

1. रत्नसंचय सूरीश्वर, *भिन्नमाल की भव्यता*, श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय, मालवाडा, वि. सं. 2072, पृष्ठ 291।
2. मुनिराज श्री जयंतविजय, *अर्बुदांचल प्रदिक्षणा जैन लेख संदोह*, आबू भाग 5, श्री यशोविजय जैन ग्रंथमाला, भावनगर, पृष्ठ 89।
3. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, *सिरोही राज्य का इतिहास*, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, तृतीय संशोधित संस्करण, 2010।
4. सोहनलाल पटनी, *जीरावल दर्शन*, श्री जीरावल पार्श्वनाथ जैन तीर्थ, जीरावल, 1982, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 31।
5. मोहनलाल बोल्या, *सिरोही व पाली जिले के जैन मंदिर*, बडगांव, उदयपुर, प्रथम संस्करण, 2016, पृष्ठ 326।
6. *तीर्थ दर्शन*, प्रथम खण्ड, श्री महावीर जैन कल्याण संघ, मद्रास, 1980, पृष्ठ 310-13।
7. सोहनलाल पटनी, *जीरावल दर्शन*, श्री जीरावल पार्श्वनाथ जैन तीर्थ, जीरावल, द्वितीय संस्करण, 1982, पृष्ठ 3-13।
8. साक्षात्कार: साहिल भंसाली, पुत्र श्री मुकेश पारसमल भंसाली, निवासी भीनमाल, हाल मुंबई।
9. साक्षात्कार: भावेश हीरालाल पारसमलजी भंसाली, समाजसेवी एवं व्यवसायी, निवासी भीनमाल, हाल मुंबई।